Vol 3 Issue 10 Nov 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-10, Nov-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

भारतीय साहित्य का सामाजिक सरोकार
(भागवत पुराण की स्तुतियों के विशेष संदर्भ में)

माधुरी यादव ,राजेश लाल मेहरा
अतिथि विद्वान हिन्दी शा. महावि. पीथमपुर जिला. धार (म.प्र.)
प्राध्यापक शा. कला एवं विज्ञान महावि. रतलाम

सारांश : अपने रचनाकाल से ही भारतीय साहित्य में लोकप्रिय श्रीमद्भागवत पुराण में समाज के बहुमुखी स्वरूप में दर्शन होते हैं । मानव–जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिसका वर्णन भागवत में अप्राप्त हो। इस दुष्टि से यह वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी सामयिक और महत्वपूर्ण है । भारतीय समाज शास्त्र के अध्ययन में वेद, पुराणादि शास्त्रों में भी सामग्री प्राप्त की जाती है, तद्नुसार अनेक ग्रन्थों के सार–स्वरूप भागवत का अध्ययन सामाजिक दृश्टि से भी महत्वपूर्ण है । पारिवारिक और सामाजिक जीवन का विशद वर्णन भागवत में विस्तार से किया गया है । सामाजिक जीवन के मूल्य और मापदण्डों को भी इसमें भली–भॉति दर्शाया गया है । वस्तुतः इसमें व्यष्टि और समष्टि दोनों का सरोकार निहित है ।

प्रस्तावना :

श्रीमद्भागवत में भारतीय समाज के बहुमुखी स्वरूप के दर्शन होते हैं । मानव–जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिसका वर्णन भागवत में अप्राप्त हो । समाज शास्त्र के अध्ययन में वेद, पुराणादि शास्त्रों से भी सामग्री प्राप्त की जाती है, तद्नुसार सब ग्रंथो के सार–स्वरूप भागवत का अध्ययन सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है । भागवत में समाज के विभिन्न अंगो–उपांगो तथा सामाजिक संगठन का विस्तृत विवेचन किया गया है ।

परिवारिक और सामाजिक जीवन का वर्णन भागवत में अत्यंत विस्तार से किया गया है । इसमे माध्यम से भारतीय राजवंशो का इतिहास तथा सामाजिक व्यवस्थाओं को भी समझा जा सकता हैं । श्रीमद्भागवत और उसका बहुमुखी विकसित समाज नामक पुस्तक में डॉ. चिल्डियाल लिखते हैं । पारिवारिक और सामाजिक स्वस्थ परम्पराओ के प्रति वे आस्थावान् थे तथा उस दिशा में वे स्वेच्छाचारिता का आचरण ही नहीं करते थे क्यों कि उनका सह अस्तित्व था । पौराणिक काल की नारी में एक पातिव्रत धर्म की भवना इतनी ऊँची थी कि उनकी संतान संस्कारी, उपकारी और जीवन के परम रहस्य को अच्छी प्रकार से जानती थी । माता–पिता के पावन विचारों का ही परिणाम था कि पौराणिक काल में सन्तान, परिवार, समाज और राश्ट्र के लिए आदर्शमयी रही है । बच्चे के लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा, अच्छे गुण और संस्कारों की शुध्दि में नारी का सबसे बडा हाथ था । पौराणिक काल की नारी के पावन विचारों की प्रतिछाया उसकी सन्तान में अच्छी प्रकार से देखी जाती है । सांख्य दर्शन के रचयिता कपिलमुनि का जन्म भी उनकी माता देवहूति की पवित्रता का आदर्श परिचायक है । भागवत में कहा गया है– श्रेष्ठ पति के द्वारा सन्तान प्राप्त होना पतिव्रता नारी के लिए महान् लाभर है ।[2] उपर्युक्तानुसार श्रीमद्भागवत में सामाजिकता का उचित ढंग से निर्वहन भागवतकार द्वारा किया गया है ।

समाजिक जीवन के अपने कुछ मूल्य होते हैं, उसके सांस्कृतिक मापदण्ड होते हैं, कुछ पालनीय नियम व आचरण होते हैं– इन्हीं सब आधारों पर कोई समाज सुरक्षित रहता है तथा विकसित होता है । रविन्द्रनाथ मुकर्जी अपनी पुस्तक सामाजिक विचारधारा में लिखते हैं, " भावनात्मक संस्कृति में धन नही मन, आराम नही आत्म–त्याग, शक्ति नहीं भक्ति, सुख नहीं शान्ति को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया जाता है । इस सांस्कृतिक अवस्था में समाज की प्रमुख नैतिकता आवश्यक रूप से उपयोगितावाद और सुखवाद से दूर रहती है । इसी कारण दैनिक जीवन के प्रत्येक पक्ष के व्यवहार का एक आध्यात्मिक आधार होता है, लोग भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए पागल नहीं होते उससे भी अधिक महत्व के सुख की खोज में लगे रहते हैं । आर्थिक जीवन में धन का महत्व घटता है और इसी कारण प्रतिस्पर्धा भी अधिक नहीं होती । आदर्शात्मक संस्कृति का जन्म चेतनात्मक एवं भावनात्मक संस्कृति के सामंजस्य से होता है । यह भौतिकवाद एवं अध्यात्मिकवाद की धाराओं का संगम हैं ।

भागवत में निहित समाजोपयोगी सिध्दांत आधुनिक युग के अनुरूप मार्गदर्शक हैं । गलाकाटा प्रतिस्पर्धा के वर्तमान युग में भागवत के विचार समीचीन हैं, – [3]मनुष्यों का स्वत्व केवल वहीं तक है जितने से उसका पेट भरता है, जो व्यक्ति उससे अधिक को अपना कहता है वह चोर है, इसलिए दण्डनीय है [4] यह भाव ईशावास्योपनिशद् के प्रथम श्लोक ' ईशावास्यं इदं सर्वम् ' से साम्य रखता है।

उपर्युक्तानुसार भागवत की स्तुतियों में सामाजिक जीवन का विस्तृत विवेचन विभिन्न प्रसंगो में प्राप्त होता है । इनमें सामाजिक जीवन के ऐसे अनमोल सूत्र भरे पडे हैं जिनसे युगों–युगों तक समाज मार्गदर्शन, प्रेरणा व उचित–अनुचित का दिशा निर्देश प्राप्त कर सकता है ।

भागवत के विभिन्न पात्र सामाजिकता या समाज धर्म का यथोचित परिपालन करते हैं । वैयक्तिक स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ या परहित के लिए काम आने में ही जीवन की सार्थकता है । स्वयं की मुक्ति या सुख की अभिलाशा के स्थान पर सब को साथ लेकर चलने का भाव, सबके मंगल की कामना में ही सामाजिक सद्भाव के अंकुर प्रफुटित होते हैं । प्रह्लाद कृत स्तुति में सामाजिक सरोकार को कितने सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है –

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा ।
मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिश्ठाः।
नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको
नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये ।।

मेरे स्वामी । बडे–बडे, ऋषि–मुनि तो प्रायः अपनी मुक्ति के लिए निर्जनवन में जाकर मौन व्रत धारण कर लेते हैं । वे दूसरों की भलाई के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं करते हैं । परन्तु मेरी दशा तो दूसरी ही हो रही है । मैं इन भूले हुए असहाय गरीबों को छोडकर अकेला मुक्त होना नहीं चाहता और इन भटकते हुए प्राणियों के लिए आपके सिवा और कोई सहारा भी नहीं दिखायी पडता ।

श्रीमद्भागवत की स्तुतियों में अनेक स्थलों पर वर्णाश्रम का वर्णन प्राप्त होता है । सनकादियों द्वारा की गई भगवान विश्णु की स्तुति में ब्राह्मण वर्ग के बारें में इस प्रकार का वर्णन प्राप्त होता है –

बाह्मण्यस्य परं दैवं ब्राह्मणाः किल ते प्रभो ।
विप्राणां देव देवानां भगवानात्मदैवतम् ।।
धर्मस्य ते भगवस्त्रियुग त्रिभिः स्वैः
पद्भिश्चराचरमिदं द्विजदेवतार्थम् ।
नूनं भृतं तदभिघाति रजस्तमश्च
सत्वेन नो वरदया तनुवा निरस्य ।।
नू त्वं द्विजोत्मकुलं यदिहात्मगोपं
गोप्ता वृशः स्वर्हणेन ससूनृतेन
तर्ह्येव नड्.श्यति शिवस्तव देव पन्था ।
लोकोऽग्रहीश्यदृशभस्य हि तत्प्रमाणम् ।।
तत्तेऽनभीष्टामिव सत्वनिधेर्विधित्सोः
क्षेम जनाय निजशक्तिभिरूद्धृतारेः ।
नैतावता व्यधिपतेर्बत विश्वभर्तु –
स्तेजः क्षतं त्ववनतस्य स ते विनोंदः[7]।।
।

प्रभो ! आप ब्राह्मणों के परम हितकारी है, इससे लोक–शिक्षा के लिए आप भले ही ऐसा माने कि ब्राह्मण मेरे आराध्यदेव है । वस्तुतः तो ब्राह्मण तथा

देवताओं के भी देवता ब्रह्मादि के भी आप ही आत्मा और आराध्यदेव हैं ।

भगवन्! आप साक्षात् धर्मस्वरूप हैं । आप सत्यादि तीनों युगों में प्रत्यक्षरूप से विद्यमान रहते हैं तथा ब्राह्मण और देवताओं के लिए तप, शौच और दया–अपने इन तीन चरणों से इस चराचर जगत् की रक्षा करते हैं । अब आप अपनी शुध्दसत्वमयी वरदायिनी मूर्ति से हमारे धर्म विरोधी रजोगुण–तमोगुण को दूर दीजिए । देव! यह ब्राह्मणकुल आपके द्वारा अवश्य रक्षणीय है । यदि साक्षात् धर्मरूप होकर भी आप सुमधुर वाणी और पूजनादि के द्वारा इस उत्तम कुल की रक्षा न करें तो आपका निश्चित किया हुआ कल्याणमार्ग ही नश्ट हो जाय क्यों कि लोक तो श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण को ही प्रमाणरूप से ग्रहण करता है । प्रभो ! आप सत्वगुण की खान हैं और सभी जीवों का कल्याण करने के लिए उत्सुक हैं, क्योंकि वेदमार्ग का उच्छेद आपको अभीष्ट नहीं है । आप त्रिलोकीनाथ और जगत्प्रतिपालक होकर भी ब्राह्मणों के प्रति इतने नम्र रहते हैं, इससे आपको तेज की कोई हानि नहीं होती, यह तो आपकी लालामात्र है । इस प्रकार ब्राह्मणों को उच्च कुल का दर्जा प्राप्त हैय परन्तु वह भी भगवान् के द्वारा रक्षणीय है । अतः उसे अहंकार नही करना चाहिए ।

भागवतकार ने भक्ति को सर्वोच्च स्थान दिया है । श्रीप्रह्लादजी कृत स्तुति में स्पष्ट कहा गया है कि धन, कुलीनता, रूप, तप, विद्या, ओज, तेज, प्रभाव, बल, पौरुष, बुध्दि और योग ये सभी गुण परमपुरुष भगवान को सन्तुष्ट करने में समर्थ नहीं है – परन्तु, भक्ति से तो भगवान् गजेंन्द्र पर भी सन्तुष्ट हो गये थै । गुण और कर्म की मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं । केवल उच्च कुल में जन्म लेना कोई विशेष महत्व नहीं रखता । प्रह्लाद जी द्वारा की गई नृसिंह भगवान् की स्तुति में प्रह्लाद जी ने स्पष्टतः यही भाव व्यक्त किया है –

विप्राद् द्विशड्गुणयुतादरविन्दाभ –
पादारविन्दविमुखाच्छ्वपचं वरिष्ठम् ।
मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थ –
प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः[9] ।।

अर्थात मेरी समझ से इन बारह गुणों से युक्त ब्राह्मण भी यदि भगवान् कलमनाभ के चरण–कमलों से विमुख हो तो उससे वह चाण्डाल श्रेष्ठ है, जिसने अपने मन, वचन, कर्म, धन और प्राण भगवान् के चरणों में समर्पित कर रखे हैं, क्योंकि वह चाण्डाल तो अपने कुल तक को पवित्र कर देता है और बडप्पन का अभिमान रखनेवाला वह ब्राह्मण अपने को भी पवित्र नहीं कर सकता । इस प्रकार कर्मों में शुध्दता की प्रशंसा की गई है ।

यमराजकृत भगवत्स्तुति में भी वर्णाश्रम का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है –

यो नामाभिर्वाचि जनान्निजायां
बध्नाति तन्त्यामिव दामाभिर्गाः ।
यस्मैं बलिं त इमे नामकर्म–
निबन्धबध्दाश्चकिता वहन्ति ।।[10]

मेरे प्यारे दूतो ! जैसे किसान अपने बैलों को पहले छोटी–छोटी रस्सियों में बॉधकर फिर उन रस्सियों को एक बडी आडी रस्सी में बॉध देते हैं, वैसे ही जगदीश्वरभगवान् ने भी ब्राह्मणादि वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि आश्रमरूप छोटी–छोटी नाम की रस्सियों में बॉधकर फिर सब नामों को वेदवाणी रूप बडी रस्सी में बांध रखा है । इस प्रकार सारे जीव नाम एवं कर्मरूप बन्धन में बॅधे हुए भयभीत होकर उन्हें ही अपना सर्वस्व भेंट कर रहे हैं।

सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम को समस्त आश्रमवर्गों का आश्रय और पालक बताते हुए इसकी महत्ता स्तुतियों में भी प्रतिपादित की गई है । महर्षि कश्यपजीकृत भगवान् शंकर की स्तुति में गृहस्थाश्रम की महत्ता इस प्रकार दर्शायी गई है –

सर्वाश्रमानुपादाय स्वाश्रमेण कलत्रवान् ।
व्यसनार्णवमत्येति जलयानैर्यथार्णवम् ।।[11]

अर्थात् जिस प्रकार जहाज पर चढकर मनुष्य महासागर को पार कर लेता है, उसी प्रकार गृहस्थाश्रमी दूसरे आश्रमों को आश्रय देता हुआ अपने आश्रम द्वारा स्वयं भी दुःख समुद्र के पार हो जाता है ।

कर्दममुनि कृत भगवान् विष्णु की स्तुति के अंतर्गत भी गृहस्थाश्रम का उल्लेख प्राप्त होता है जहॉ मुनिवर भगवान् से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु आज्ञा और आशीश प्राप्त करने हेतु प्रार्थना करते हैं–

तथा स चाहं परिवोढुकामः ।
समानशीलां गृहमेधधेनुम् ।
उपेयिवान्मूलमशेशमूलं
दुराशयः कामदुघड्घ्रिपस्य ।।[12]

प्रभो ! आप कल्पवृक्ष है । आपके चरण समस्त मनोरथों को पूर्ण करनेवाले है । मेरा हृदय काम–कलुशित है । मैं भी अपने अनुरूप स्वभाववाली और गृहस्थ धर्म के पालन में सहायक शीलवती कन्या से विवाह करने के लिए आपके चरण–कमलों की शरण में आया हूॅ । इस प्रकार अपने प्रत्येक कार्यों के सम्पादन हेतु भगवान् को साक्षी बनाया गया है, भगवान् की आज्ञा, सम्मति और आशीश चाहा गया है, जो कर्म की शुध्दि का हेतु है ।

भागवत की स्तुतियों में विभिन्न जातियों का वर्णन उपलब्ध होता है । श्री शुकदेवजी कृत श्रीकृष्ण स्तुति में अनेक जातियों का वर्णन इस प्रकार किया गया है –

किरातहूणान्धपुलिन्दपुलकसा
आभीरकड्कायवनाः खसादयः ।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः ।
शुध्यन्ति तस्मै प्रभविश्णवे नमः ।।[13]

किरात, हूण, आन्ध्र, पुलिन्द, पुल्कस, आभीर, कड्क, यवन और खस आदि नीच जातियॉ तथा दूसरे पापी जिनके शरणागत भक्तों की शरण ग्रहण करने से ही पवित्र हो जाते हैं, उन सर्वशक्तिमान् भगवान को बार–बार नमस्कार है ।

इसी प्रकार निशाद जाति का उल्लेख भी विस्तार के साथ किया गया है । वेन के दूराचार से सारे लोक के मुनिगण त्रस्त हो गए है और उन्होंने उसे मार डालने की आज्ञा दी । उसके मरने के बाद उन दिनों लोकों में अनेक उपद्रव व आतंक फैलने लगा जिससे चितिंत हो ऋषियों ने उस मरे हुए वेन की जॉध को बडे जोर से मथा उसमें से एक बौना पुरूश उत्पन्न हुआ[14] ।

काककृष्णोऽतिह्रस्वाड्गो ह्रस्वबाहुर्महाहनुः ।
ह्रस्वपान्निन्मनासान्गो रक्ताक्षस्ताम्रमूर्धजः ।।
तं तु तेऽवनतं दीनं किं करोमीति वादिनम् ।
निशीदेत्यब्रुवंस्तात स निशादस्ततोऽभवत् ।।
तस्य वंश्यास्तु नैशादा गिरिकाननगोचराः ।
येनाहरज्जायमानो वेनकल्मशमुल्बणम् ।।[15]

वह कौए के समान काला था, उसके सभी अंग और खासकर भुजाऍ बहुत छोटी थी, जबडे बहुत बडे, टॉगे छोटी, नाक चपटी, नेत्र लाल और केश तॉबे के– से रंग के थे । उसने बडी दीनता और नम्रभाव से पूछा कि मैं क्या करूँ ?तो ऋशियों ने कहा–' निशीद (बैठ जा) ।' इसी से वह ' निशाद 'कहलाया । उसने जन्म लेते ही राजा वेन के भयंकर पापों को अपने ऊपर ले लिया, इसीलिए उसके वंशधर नैशाद भी हिंसा, लूट–पाट आदि पापकर्मो में रत रहते हैं । अतः वे गॉव और नगर में न टिककर वन और पर्वतों में ही निवास करते हैं ।

वेणुगीत में गोपियॉ आपस में चर्चा करती हुई भीलनियों को श्रेश्ठ बताती हुई कहती हैं – अरी हम तो वृन्दावन की इन भीलनियों को ही धन्य और कृतकृत्य मानती हैं ।

पूर्णाः पुलिन्द्य उरूगायपदाब्जराग –
श्रीकुड्कुमेन दयितास्तनमण्डितेन ।
तद्दर्शनस्मररूजस्तृणरूशितेन
लिम्पन्त्य आननकुचेशु जहुस्तदाधिम् ।।[16]

भागवत में स्त्री जाति को अत्यंत आदर–सम्मान दिया गया है तथा वह सभी के द्वारा रक्षणीय बतलाई गई है । महाराज पृथु के द्वारा पृथ्वी पर कुपित होने पर पृथ्वी प्रार्थना करते हुए यही भाव व्यक्त करती है –

उवाच च महाभागं धर्मज्ञानपन्नवत्सल ।
त्राहि मामपि भूतानां पालनेऽवस्थितो भवान्।
स त्वं जिघांससे कस्माद्दीनामकृतकिल्बिशाम् ।
अहनिश्यत्कथं योशां धर्मज्ञ इति यो मतः ।
प्रहरन्ति न वै स्त्रीशु कृतागः स्वपि जन्तवः।
किमुत त्वद्विधा राजन् करूणा दीनवत्सलाः ।।
मां विपाटयाजरां नावं यत्र विश्वं प्रतिष्ठितम् ।

आत्मानं च प्रजायश्चेमाः कथमम्भसि धास्यसि [17]।

पृथ्वी महाराज पृथुजी से कहने लगी–धर्म के तत्व को जानने वाले शरणागतवत्सल राजन् ! आप तो सभी प्राणियों की रक्षा करने में तत्पर है, आप मेरी भी रक्षा कीजिए । मैं अत्यंन्त दीन और निरपराध हूँ, आप मुझे क्यों मारना चाहते है ?इसके सिवा आप तो धर्मज्ञ माने जाते हैंय फिर मुझ स्त्री का वध आप कैसे कर सकेंगे ?स्त्रियॉ कोई अपराध करें, तो साधारण जीव भी उनपर हाथ नहीं उठाते, फिर आप जैसे करूणामय और दीनवत्सल तो ऐसा कर ही कैसे सकते हैं ? मैं तो एक सुदृढ नौका के समान हूँ, सारा जगत् मेरे ही आधार पर स्थित है । मुझे तोडकर आप अपने को और अपनी प्रजा को जल के ऊपर कैसे रखेंगे ?

भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए हस्तिानापुर की कुलीन रमणियॉ स्त्री–जाति के गौरव को इंगित करते हुए कहती हैं –

या वीर्यशुल्केन हृताः स्वयंवरे
प्रमथ्य चैद्यप्रमुखान् हि शुश्मिणः ।
प्रद्युम्नसाम्बसुतादयोऽपरा ।
याश्चाहृता भौमवधे सहस्त्रशः ।।
एतां परं स्त्रीत्वमपास्तपेशलं
निरस्तशौचं बत साधु कुर्वते ।
यासां गृहात्पुष्कर लोचनः पति
र्न जात्वपैत्याहृतिभिर्हृदि स्पृशन् ।[18]

अर्थात वे स्वयंवर में शिशुपाल आदि मतवाले राजाओं का मानमर्दन करके जिनको अपने बाहुबल से हर लाए थे तथा जिनके पुत्र प्रद्युम्न, साम्ब, आम्ब आदि हैं, वे रुक्मिणी आदि आठों पटरानियों और भौमासुर को मारकर लायी हुई जो इनकी हजारों अन्य पत्नियॉ हैं, वे वास्तव में धन्य हैं । क्योंकि इन सभी ने स्वतन्त्रता और पवित्रता से रहित स्त्री जीवन को पवित्र और उज्ज्वल बना दिया है । इनकी महिमा वर्णन और कोई क्या करे । इनके स्वामी साक्षात् कमलनयन भगवान् श्रीकृष्ण हैं, जो नाना प्रकार की प्रिय चेष्टाओं तथा पारिजातादि प्रिय वस्तुओं की भेंट से इनके हृदय में प्रेम एवं आनन्द की अभिवृध्दि करते हुए कभी एक क्षण के लिए भी इन्हें छोडकर दूसरी जगह नहीं जाते । इस प्रकार भगवान को समर्पित जीवन स्त्री के लिए श्रेष्ठ होता है ।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि भागवत की स्तुतियों में भारतीय संस्कृति और समाज जीवन के श्रेष्ठ आदर्शों को सम्यक् रूप में दर्शाया गया है । उन जीवन मूल्यों की ओर भी संकेत किया गया है, जिनसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र संस्कारित होकर उत्तरोत्तर श्रेष्ठ दिशा में आगे बढते हैं । स्तुतियों में निहित उपदेश मनुष्य का विवेक जागृत कर उसे सचेत करते हैं, ताकि वह ठोकरें खाने से बच जाए । वस्तुतः भागवत की स्तुतियॉ सामाजिक दृष्टि से वरेण्य और उपयोगी हैं ।

संदर्भ सूची –

1.धिल्डियाल अच्युतानंद, ' श्रीमद्भागवत और उसका बहुमुखी समाज', सी 3–1, सोनिया सिंगरा, वाराणसी, उ. प्र., सन् 1990, पृष्ठ 292 ।
2.भूयाद्गरीयसि गुणः प्रसवः सतीनाम् ।। श्रीमद्भागवत 3.23.10
3.सेती वीरेन्द्रचन्द्र, " भारतीय संस्कृति के मूल तत्व ", राजपाल प्रकाशन, दिल्ली सन् 1998, पृष्ठ 5 से उद्धृत ।
4.श्रीमद्भागवत, 7.14.8
5.श्रीमद्भागवत, 7.9.44
6.श्रीमद्भागवत, 3.16.17
7.श्रीमद्भागवत, 3.16.22–24
8.श्रीमद्भागवत, 7.9.9
9.श्रीमद्भागवत, 7.9.10
10.श्रीमद्भागवत, 6.6.13
11.श्रीमद्भागवत, 3.14.17
12.श्रीमद्भागवत, 3.21.15
13.श्रीमद्भागवत, 2.4.18
14.श्रीमद्भागवत, 4.14.43
15.श्रीमद्भागवत, 4.14.44–46
16.श्रीमद्भागवत, 10.21.17
17.श्रीमद्भागवत, 4.17.8–21
18.श्रीमद्भागवत, 1.10.29–30

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net